प्र॰ मुक्तक काव्य की परिभाषा देते हुए उसके भेदों की परिभाषित करें। -संस्कृत साहित्य

वर्ग: 4

प्रथमपत्रम् खण्ड (क) Part - I Paper I

प्रश्न: 4 मुक्तककाव्यस्य का परिभाषा? कतिभेदाः? अस्य का विशेषतास्ति? वर्णयत 1×60=60

उत्तरम् :- खण्डकाव्य के दो भेद होते हैं- प्रबन्ध एवं मुक्तक। प्रबन्ध खण्डकाव्य के अन्तर्गत मेघदूतम् जैसे काव्य आते हैं। मुक्तककाव्य के पुनः दो भेद हैं- लौकिक एवं धार्मिक। धार्मिक मुक्तककाव्य के अन्तर्गत विविध स्तोत्रकाव्य का परिगणयन किया जाता है। लौकिकमुक्तक पुनः तीन प्रकार के होते हैं- शृंगार, नीति एवं वैराग्य।

मुक्तककाव्य जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है पूर्व का सन्दर्भ आदि बाह्य उपकरणों से पूरी तरह मुक्त रहता है। इसमें एक ही पद्य में रस की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा किसी-किसी विषय का सांगोपांग चित्रण होता है। प्रत्येक पद्य अपने में स्वतंत्र होता है। उसे समझने के लिये पूर्वापर प्रसंग की अपेक्षा नहीं होती है। आनन्दवर्धन के अनुसार :-

"पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा-
क्रियते तदेव मुक्तकम् ।"

संस्कृत के मुक्तक उन रसभरे मोदकों के समान हैं। जिनके आस्वादन मात्र से सहृदयों →

का हृदय सद्यः संहृष्ट होकर आनन्दयुक्त हो जाता है। रस की पुष्टि के लिये जो प्रबन्ध काव्य को उत्तम मानते हैं, वे आनन्दवर्धन के इस उक्ति से परिचित नहीं हैं —

'मुक्तकेषु हि प्रबन्धेषु इव रसबन्धाभि-
निवेशिनः कवयो दृश्यन्ते।"

रमणी-सौन्दर्य जितनी सुन्दरता तथा स्वभाविकता के साथ मुक्तकों में प्रस्फुटित हुआ है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। नारी के हृदय तथा रूप की छटा के रंगीन चित्र किस रसिक के हृदय में आमोद-प्रमोद की सरिता नहीं बहाते! शृंगार के विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन अमरुकशतक के इस मुक्तक में

शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छनै-
र्निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वर्ण्य पत्युर्मुखम्।
विस्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं
लज्जानम्री प्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता॥

इस मुक्तक में कितना सुन्दर एक ग्रामीण नवोढ़ा का वर्णन किया गया है। नायिका शयनकक्ष को सूना देखकर, पलंग पर से धीरे-धीरे उठी, और उठकर निद्रा के बहाने लेटे हुए प्रियतम के मुख को बहुत देर तक बड़े ध्यान से देखती रही, कि कहीं जाग तो नहीं रहे हैं, फिर सोता हुआ समझकर निःशंकभाव से चुम्बन किया परन्तु छलपूर्वक →

PANINI CLASSES

निद्रा का बहाना बनाये हुए पति के पुलकित गाल को देखकर नववधू लज्जा से नम्रमुखी हो गई और हँसते हुए प्रियतम ने बहुत देर तक उसका चुम्बन किया।

अमरुकशतक एक शृंगारिक मुक्तककाव्य है। शृंगार रस का जितना सजीव वर्णन इसमें हुआ है, उतना कहीं भी किसी काव्य में नहीं हो पाया है। संयोग तथा वियोग शृंगार की भिन्न-भिन्न दशाओं एवं परिस्थितियों को अत्यन्त रोचक संवाद शैली में प्रस्तुत करते हुए अमरुक ने लिखा—

"बाले! नाथ! विमुञ्च मानिनि! रुषं, रोषान्मया किं कृतम्
खेदोऽस्मासु न मेऽपराध्यति भवान्, सर्वेऽपराधा मयि।
तत्किं रोदिषि गद्गदेन वचसा, कस्याग्रतो रुद्यते,
नन्वेतन्मम, का तवास्मि, दयिता, नास्मीत्यतो रुद्यते॥"

नारी प्रेम की उदात्तता तथा विशुद्धता का सम्यक् परिपाक मुक्तककाव्य अमरुकशतक में देखने को मिलता है।

महाकवि भर्तृहरि की तीन कृतियाँ शृंगारशतक, वैराग्यशतक तथा नीतिशतक - मुक्तक काव्य की विशेषताओं से भरे पड़े हैं। नीतिशतक में नीतिसम्बन्धी मुक्तक हैं, जो अपने आप में स्वयम् एक काव्य होने का मादा रखते हैं -

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत्

→

PANINI CLASSES

न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजन चित्तमाराधयेत् ।"

। मुक्तक में उदाहरण प्रत्युदाहरण देकर बताया गया है कि आप बालु को पेरकर उससे तेल प्राप्त कर सकते हैं। मृगतृष्णा में भी पानी पी सकते हैं। पृथिवी पर घूमते हुए आप खरहे का विषाण (सींग) पा सकते हैं किन्तु जिद्दी मूर्ख व्यक्ति के मन को प्रसन्न नहीं कर सकते

मुक्तककाव्य के सन्दर्भ में आनन्दवर्धन का कथन है कि इनके प्रत्येक पद्य अत्यल्पकाय होने के बाद भी रस और भाव से भरे होने के कारण प्रबन्ध की समता रखते हैं। उनके प्रत्येक पद्य "गागर में सागर" की उक्ति को चरितार्थ करते हुए दिखाई देते हैं।"

इसके अतिरिक्त जयदेवकृत गीतगोविन्दम्, महाकवि बिल्हणकृत 'चौरपञ्चाशिका' गोवर्धनाचार्य कृत आर्यासप्तशती, पण्डितराज जगन्नाथकृत भामिनीविलासम् इत्यादि मुक्तककाव्य प्रसिद्ध हैं

धार्मिक मुक्तकों के अन्तर्गत विविध देवताओं की स्तुतियों का समाहार किया जाता है। सम्पूर्ण वैदिक संहिताएँ देवताओं की विशिष्ट स्तुतियाँ हैं। ऐसा विशाल स्तोत्रमुक्तककाव्य अन्य किसी भी साहित्य में उपलब्ध नहीं होता है धार्मिक मुक्तकों में स्तोत्र के अन्तर्गत शिवमहिम्नास्तोत्रम्, सूर्यशतकम्, चण्डीशतकम् करुणालहरी, गंगालहरी, अमृतलहरी तथा सुधालहरी का नाम आदर के साथ लिया जाता है।